भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में दलित अवधारणा

विवेक सिंह

दलित शब्द उन्नीसवीं शताब्दी के सुधारवादी आंदोलनों की देन है जब अनेक विद्वानों, समाजसुधारकों ने वर्ण व्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर खड़े शूद्र वर्ग की सोचनीय दशा की तरफ पूरे राष्ट्र का ध्यान दिलाया और भारतीय सामाजिक व्यवस्था को बदलने का आन्दोलन छेड़ा उसी दौरान यह शब्द प्रचलन में आया। 1867 में महादेव गोविन्द रानाडे, सर आर0जी0 भंडारकर एवं नारायण चन्द्रावरकर ने मिलकर महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना की। प्रार्थना समाज के समर्थकों ने 'दलित वर्ग मिशन' नामक संस्था की स्थापना की जिसका मूल उद्देश्य दलित वर्ग के उत्थान हेतु कार्य करना था।